कोविड - 19 महामारी एवं भारत का बदलता मानचित्र

- <u>महामारी का प्रकोप एवं विस्तार</u> - कहना न होगा परंतु यह त्रासदी भारतीयों के स्मृति पटल में गढ़ चुका है। एवं इसके परिचय एवं इसके संदर्भ में सामान्य जन को ज्ञान न हो यह तो कदापि कहना भी उचित न होगा। 2019 के अंत क्षणिक महाआने वाली इस बीमारी का प्रभाव इसके उपरांत दो वर्षों तक देखा गया। जब आज भी हम उस महामारी से संक्रमित व्यक्तियों के मृत्यु के आंकड़े देखते हैं तो चौंधिया जाते हैं।

- <u>लॉकडाउन का लगना एवं रोजगार पर अप्रत्याशित प्रभाव</u> - उचित समय यह देखा गया कि उसके ~~प्रांरभिक~~ प्रारंभिक चरणों में ही सरकार द्वारा लॉकडाउन घोषित कर दिया गया। परंतु इसका दुष्प्रभाव रोज़गार व्यवस्था एवं व्यवसाय पर पड़ा परिणामस्वरूप देश की अर्थव्यवस्था ही नहीं अपितु सामान्य जन का भी व्यय गिरता रहा। हर व्यक्ति सरकार द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करता देखा गया। परंतु जहाँ लोग अब घर की चाहरदीवारी में बंद व साथ सार्वजनिकता से दूर ही बने रहें। हास्यास्पद तो यह था कि जहाँ पत्र-पत्रिकाएं एवं टी.वी पर आने वाली खबरे लोगों के विश्वास का खंडन कर रही थी वहीं आपस में परिजन सहानुभूति एवं आशा ~~की~~ का संचार कर रहे थे।

- <u>कृतज्ञता एवं समर्पण की भावना का विस्तार</u> - यह देखा गया कि हर व्यक्ति ने द्वेष के बिना हर उस व्यक्ति को सम्मान दिया गया जिन्होंने सामाजिक सेवा के नाम पर अपने प्राण भी न्यौछावर कर डाले। चाहे वह डॉक्टर हो या कोई सफाई कर्मचारी। एवं यह तो प्रत्याशित ही था एवं लोगों की अंदर की धार्मिकता का भी सृजन हुआ ईश्वर के माध्यम से ही हर कोई अपने हिम्मत एवं विश्वास का संरक्षण करता रहा देखा गया, जगह - जगह महिषासुरमर्दिनी माँ

को दुष्ट असुर की जगह वाइरस का अंत करते हुए दिखाया गया जो मनुष्य चेतना को उजागर करता है।

- <u>सहयोगिता एवं "वसुधैव कुटुम्बकम्" की भावना</u> – इस कठिन समय में हर व्यक्ति ने कलह व कलेश की भावना का अंत करते हुए एक दूसरे का साथ दिया। यह ~~एकजु~~ एकजुटता की भावना ने ~~कदापि~~ हर व्यक्ति को एक दूसरे के कष्ट को समझने की अनुभूति दी एवं जिस कारण इस महामारी पर हमने विजय प्राप्त किया। इस महामारी के कारण ही शायद यह मनुष्य को ज्ञात हुआ होगा की उसकी असली क्षमता उसकी समुचित सोच से भी कई गुणा है।

- <u>वैश्वीकरण एवं ऑनलाइन दुनिया का विस्तार</u> – जहाँ हमने देखा कि कोविड –19 ने मनुष्य जाति का विध्वंस किया। वहीं ~~वहीं~~ इसी के विपरीत इस घटना के कारण सोशल मीडिया के उपयोग में बढ़ोत्तरी देखी गयी एवं ऑनलाइन दुनिया का विस्तार देखा गया। वैश्वीकरण के कारण मनुष्य सभी सुविधाओं का भोक्ता बनता चला गया एवं सभी सुविधाएँ उसके स्पर्श मात्र से उपलब्ध हो सकती है चाहे फिर उसे भोजन ~~की~~ आवश्यकता हो या उसे रोज़मर्रा के चीज़ों की।

- <u>ऑनलाइन शिक्षा की नींव</u> – कोविड –19 महामारी के उपरांत ही देखा गया कि बालक एवं विद्यार्थी वर्ग की लालसा ऑनलाइन शिक्षा के प्रति बढ़ी। जिस शिक्षा पर केवल धनवान ~~एवं~~ का अधिकार था वह सबके लिए उपलब्ध था एवं जिस कारण आज शिक्षा कम से कम दामों पर उपलब्ध है ~~एवं~~, देश के भविष्य निर्माणक विद्यार्थी वर्ग आज शिक्षा प्राप्त करने के लिए स्वच्छंद है।

• साइबर क्राइम का बढ़ना एवं सामान्य जन में बढ़ती जागरूकता - जहाँ इसके प्रभावस्वरूप शिक्षा एवं अन्य क्षेत्र दोगुना चौगुना बढ़ा वहीं साइबर क्राइम में भी बढ़ोतरी देखी गयी। साइबर क्राइम अर्थात वर्तमान टेक्नोलॉजी एवं विज्ञान के उपकरणों जैसे मोबाईल, कम्प्यूटर लैपटॉप द्वारा किया गया क्राइम। यह मनुष्य की नीच प्रवृत्ति को प्रत्यक्ष प्रमाणित करती है। जहाँ सोशल मीडिया सामान्य जन को जानकारी द्वारा सूचित रखती है वहीं झूठी खबरों द्वारा लोगों को भ्रमित भी कर रही है। इंटरनेट अपराध करने वालों का एक ज़रिए बन चुका है। इससे लोगों के निजित्व का हनन हो रहा है उन्हें लॉटरी एवं नौकरी लग जाने के नाम से ठगा जाता है एवं बिना सोचे समझे व्यक्ति अनजानी लिंक्स पर क्लिक भी कर देता है एवं ठगी का शिकार बनता चला जाता है। परंतु शिक्षा दर में बढ़ोत्तरी एवं सरकार के द्वारा भी सामान्य जन में जागरूकता के प्रति सूचेत करने पर सामान्य जन में सतर्कता भी बढ़ी।

• टूटते रिश्ते, बढ़ती दूरियाँ एवं उपभोक्तावाद - परंतु अंत: में जब हम देखते है तो पाते है कि व्यक्ति के अंदर से आज वह अपनापन एवं भाईचारा जैसी भावनाओं का अंत हो चुका है एवं दिखावे की दुनिया में हम सभी समाते चले जा रहे हैं। प्रेम जैसी निर्मल भावना तो मानो लुप्त ही हो चुकी है। पारिवारिक दूरियाँ बढ़ रही है एवं रिश्तों में दरार आ रही हैं। हर व्यक्ति अपनी संस्कृति, त्योहार, परिजन सभी से दूर हो गया है या कहे वह आत्म केंद्रित बन चुका है। कदापि समाज में बदलाव लाने के लिए विमुखता नहीं अपितु निडर हृदय की आवश्यकता है। हमारी संस्कृति हमारी जड़े ही हमारा निर्माण करती है। इतिहास को अगर हम मार्गदर्शक लेकर चले तो हम ही हम अपनी वर्तमान भूल सुधार सकेंगे एवं भारतवर्ष को उसका उचित सम्मान लौटा सकेंगे।

धन्यवाद !!